15

यीशु की मृत्यु

मत्ती 27:50; मरकुस 15:37; लूका 23:46; यूहन्ना 19:30

''और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए'' (लूका 23:46)।

मसीहियत में ऐसा क्या है, जो अन्य धर्मों में नहीं मिल सकता? यीशु मसीह और उसका क्रूस! हमारे पापों को क्षमा करने के लिए यीशु के बलिदान के बिना परमेश्वर न तो हमारा उद्धार कर सकता है और न करेगा। जो मसीह में रहते हैं, उनके लिए न्याय का मसला सुलझ चुका है। जो उद्धार से बाहर हैं, उनके लिए न्याय अभी होने वाला है।

कई लोग ''सस्ता अनुग्रह'' की बात करते हैं, परन्तु सस्ता अनुग्रह कोई नहीं है। अनुग्रह परमेश्वर के क्रोध की अनदेखी नहीं करता, उसे भूलता नहीं या रद्द नहीं करता। अनुग्रह पाप के दाम, हर्जाने और दण्ड को समा लेता है। हर पापी और हर पाप को या तो मसीह में या नरक में दण्ड दिया जाता है। परमेश्वर की ओर से सब कुछ मसीह में मिलता है, यानी कोई आत्मिक आशीष मसीह के बाहर नहीं है (इफिसियों 1:3)।

यीशु मरा

परमेश्वर होने के कारण, परमेश्वर मर नहीं सकता, तौ भी यीशु मर गया! उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में हमें पता होना आवश्यक है कि वह क्यों मरा (हमारे पापों के लिए) क्यों मरा। ज्यादातर ध्यान केवल इसी पर दिया जाता है कि वह कैसे मरा।

हम जानते हैं कि पिलातुस स्तब्ध था कि यीशु इतनी जल्दी कैसे मर गया (मरकुस 15:44)। तौ भी इसमें संदेह नहीं कि यीशु मर गया है। यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दूसरे दो आदमियों की टांगें तोड़ी गई थीं, ताकि उनकी मृत्यु जल्दी हो जाए (यूहन्ना 19:31-34) पवित्र आत्मा ने सुसमाचार के लेखक को यह जानकारी शामिल करने की प्रेरणा दी, इसका मतलब उसने इसे हमें बताना आवश्यक समझा होगा। वह हमें यकीन दिलाना चाहता था कि यीशु सचमुच मरा।

कइयों का ख्याल है कि यीशु की मृत्यु थकावट से हुई। उसे सोने नहीं दिया गया था, उसे खाना नहीं मिला था और यहूदी व रोमी दोनों अदालतों में उसके साथ बेरहमी से व्यवहार किया गया था। एक विद्वान ने निष्कर्ष निकाला कि इन मुकदमों के दौरान यीशु 2.6 मील चला था। क्रूरतापूर्वक कोड़े मारे जाने को न भूलें। थका-मांदा यीशु अपना क्रूस नहीं उठा सकता था।

अन्यों का विचार है कि यीशु दु:खी होकर मर गया। उसे शारीरिक रूप से कमज़ोर और मानसिक रूप से निचोड़ दिया गया था। यीशु अपने ऊपर उण्डेले जाने वाले परमेश्वर के क्रोध को ले रहा था। एक प्रेरित ने उसे पकड़वाया था, एक और प्रेरित ने उसका इनकार किया था और यूहन्ना को छोड़ बाकी सब उसे छोड़ गए थे। मानवीय अर्थ में कहें तो यीशु अकेला रह गया था। ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना 1:11)।

ऐसे भी है, जिनका विचार है कि यीशु की मृत्यु हृदय के फट जाने (हार्ट अटैक) से हुई। उसकी तुरन्त मृत्यु एक भयानक घटना का संकेत प्रतीत होती है।

कइयों के साथ यीशु से अधिक दुर्व्यवहार होता था। उसकी मृत्यु हृदय के फट जाने से या हृदय की धमनियों के रुक जाने से हुई, महत्वपूर्ण बात यह है कि वह मरा, न कि यह कि कैसे मरा। रोमी पहरेदारों ने अपने शिकार को तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसकी मृत्यु सुनिश्चित नहीं हो गई। यीशु सचमुच मर गया!

यीशु मेरे लिए मरा

बाइबल यह कभी नहीं कहती कि यीशु हमारे लिए जिया था उसने हमारे लिए काम किया, परन्तु बाइबल जोर देकर यह घोषणा करती है कि यीशु हमारे लिए मरा। यशायाह ने कहा कि वह हमारे अधर्मों के कारण कुचला गया (यशायाह 53:5)। क्रूस ने पाप की समस्या का परमेश्वर का समाधान दे दिया।

पिलातुस ने लाश दफनाने के लिए तब तक नहीं देनी थी जब तक वह यह सुनिश्चित न कर लेता कि यीशु मर चुका है (मरकुस 15:44-47)। उसने बिल्कुल संदेह नहीं किया कि यीशु मर गया था। यीशु की मृत्यु ऐतिहासिक (सारांश) है। मेरे लिए यीशु की मृत्यु व्यक्तिगत (उद्धारक) है। केवल यही विश्वास करना कि यीशु मरा काफी नहीं है: मेरे लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु मेरे लिए मरा। यीशु ने क्रूस पर जो भी किया वह मेरे लिए किया। परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है और मुझे चाहता है (यूहन्ना 3:16)। गाओ .... पुकारो। .... ''मेरा उद्धार करने वाला है!''

इसे याद रखें: अपने आपको हर रोज सुसमाचार बताएं। आप को बचाने के लिए क्रूस की आवश्यकता पड़ी। आपको बचाए रखने के लिए क्रूस आवश्यक है। अनुग्रह की सम्प्रभुता पर ध्यान करें।

अनुग्रह कमाया नहीं जा सकता-यह एक दान है।
अनुग्रह खरीदा नहीं जा सकता-यह बिकाऊ नहीं है।
अनुग्रह को अर्जित नहीं किया जा सकता-यह अवर्जित है।
अनुग्रह लौटाया नहीं जा सकता-यह कर्जदार नहीं बनाता।
अनुग्रह सब कुछ बदल देता है-इससे उद्धार मिलता है।

यीशु मेरे पापों के लिए मरा (1 कुरिन्थियों 15:1-4)! एक छोटी लड़की ने क्रूस का संदेश सुना। उसने प्रचारक को बताया, ''उसने आपके लिए इतना कुछ किया है, आपको उसे संसार की सब चीजों से बढ़कर प्रेम करना चाहिए।'' हां, हम करते हैं।

अवर्जित प्रेम शर्त रहित प्रेम है यानी पापी ''दूर देश'' (लूका 15; KJV) में रह उद्धार नहीं पा सकते। उद्धार कामों के आधार पर है, फिर भी मसीही प्रेम भले कामों में दिखाया जाता है (इफिसियों 2:8-10)। सच्चा प्रेम मान करता है क्योंकि इसकी शर्तें बच्चों के लिए नहीं हैं। मसीहियत एक दान है, न कि सौदा। इसका दान यीशु का जीवन था और इसके लिए हमारे जीवन भी देने पड़ेंगे। अनुग्रह बोतल में पड़ा जिन्न नहीं है, बल्कि अनुग्रह तो क्रूस है। चेला बनने की कीमत बहुत बड़ी है, यानी आपका जीवन है। क्रूस पर यीशु अपनी ही चिन्ता नहीं कर रहा था और हमें उसका यह नि:स्वार्थ नमूना अपनाना आवश्यक है।

मसीह को क्रूस पर किस ने चढ़ाया? मैंने चढ़ाया! क्रूस पर यीशु के शरीर में कील किसने ठोंके? मैंने ठोंके! जब तक हम यह नहीं समझ पाते कि हमने ऐसा क्या किया जिससे उसे क्रूस पर मरना पड़ा, तब तक हमें यह समझ नहीं आएगी कि मसीह ने हमारे लिए क्या किया! पाप एक आत्मिक विद्रोह है। यह जघन्य है और हमें परमेश्वर से अलग करता है (यशायाह 59:1-3)। मसीह ने हमारे लिए वह किया जो हम अपने लिए नहीं कर सकते थे। मसीह से अलग होकर, हम केवल अपने पापों में मर सकते हैं। पतरस ने अपने सुनने वालों पर मसीह की हत्या का आरोप लगाया था (प्रेरितों 2:22-36)। उन्होंने उसे शारीरिक रूप में मारा था, परन्तु हमने उसे आत्मिक रूप में मारा है। अनुग्रह की महिमा को समझना आवश्यक है। यदि लोग मसीह में परिवर्तित नहीं हुए हैं, उन्हें लग सकता है कि उन्होंने मसीहियत को अपनाने की कोशिश की परन्तु नहीं अपना सके, जबकि वास्तव में उन्होंने कोशिश की ही नहीं। अपने आप को और अपने बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए उन्हें क्रूस दे दें। क्रूसारोहण से संसार की सृष्टि, हमारे वर्तमान जीवन तथा भविष्य का पता चल जाता है। हमें अपने आप को याद दिलाना चाहिए ''यह सब मेरे ही कारण हुआ।''

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!